पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं
पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा आयोजित

47वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 21 मई 2013 से 7 जून 2013 तक

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगने वाला प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित होने जा रहा है।

प्रशिक्षण शिविर में देवलाली पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

विशिष्ट कार्यक्रम -

ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह –	21 मई,
अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन –	26 मई
टोडरमल स्नातक परिषद का महाराष्ट्र प्रान्तीय सम्मेलन –	1 जून
अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् द्वारा आयोजित विद्वत्संगोष्ठी –	2 जून
प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन –	6 जून
दीक्षान्त एवं समापन समारोह –	7 जून

हार्दिक अनुरोध :- 1. आपके यहाँ से कितने भाई-बहिन एवं प्रशिक्षणार्थी शिविर में पधार रहे हैं व कब से कब तक रहेंगे, इसकी पूर्व सूचना 1 मई तक जयपुर कार्यालय को अनिवार्य रूप से भिजवायें ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके। 2. श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर,
जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458
Email-ptstjaipur@yahoo.com
देवलाली का पता – पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लाम रोड, देवलाली, नासिक-422401 (महा.) फोन नं. (0253) 2491044

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 31 (वीर नि. संवत् - 2539) 358 अंक : 10

कोई भोग को...

कोई भोग को न चाहो, यह भोग बद बला है।।टेक।।
मिलता सहज नहीं है, रहने की गम नहीं है।
सेनें-सेती सुनी है, रावनसा खाक मिला है।।
कोई भोग को...।।1।।
वानीतैं हिरन हरिया, रसनातैं मीन मरिया।
करनी करी पकरिया, पावक पतँग जला है।।
कोई भोग को...।।2।।
अलि नासिकाके काजै, बसिया है कौंल-मांजै।
जब होय गई सांजै, ततखिन पिरान दला है।।
कोई भोग को...।।3।।
विषयों से रागताई, ले जात नर्क माईं।
कोई नहीं सहाई, काटें तहां गला है।।
कोई भोग को...।।4।।
'बुधजन'की सीख लीजे, आतुरता त्याग दीजे।
जल्दी संतोष कीजे, इसमें तेरा भला है।।
कोई भोग को...।।5।।

– कविवर पण्डित बुधजनजी

छहढाला प्रवचन

8 अंग सहित सम्यक्त्व

जिन वच में शंका न धार वृष, भव-सुख-वांछा भानै।
मुनि-तन मलिन न देख घिनावै, तत्त्व-कुतत्त्व पिछानै।।
निज गुण अरु पर औगुण ढाँके, वा निजधर्म बढ़ावै।
कामादिक कर वृषतैं चिगते, निज पर को सु दिढ़ावै।।१२।।
धर्मी सों गौ-वच्छ-प्रीति सम, कर जिनधर्म दिपावै।
इन गुणतैं विपरीत दोष वसु, तिनकों सतत खिपावै।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

धर्मात्मा जीव का शरीर स्वभाव से अशुचि का धाम और क्षणभंगुर होने पर भी उसका आत्मा रत्नत्रय से सहज पवित्र है। शरीर में सुगन्ध अथवा दुर्गन्ध होना जड़ का धर्म है। ऐसा कोई नियम नहीं है कि धर्मी का शरीर कुरूप न हो; किसी का शरीर कुरूप भी हो, आवाज भी स्पष्ट न निकलती हो; लेकिन इससे आत्मसाधना में कोई बाधा नहीं आती। अन्तर में तो धर्मात्मा अपने को देह से भिन्न अशरीरी ज्ञानमय अनुभव करते हैं। रत्नकरण्डश्रावकाचार में आचार्य समन्तभद्र कहते हैं कि ह्न

सम्यग्दर्शनसम्पन्नम् अपि मातङ्गदेहजम्।
देवा देवं विदुर्भस्मगूढाङ्गारान्तरौजसम्।।२८।।

चांडाल के देह में रहता हुआ भी सम्यग्दृष्टि आत्मा देव समान शोभता है, भस्म से ढँके हुए अग्नि के अंगार की तरह देवरूपी भस्म के अन्दर सम्यक्त्वरूप औजस से यह आत्मा शोभता है, ऐसा आत्मा प्रशंसनीय है। इसप्रकार आत्मा के सम्यक्त्व को पहिचानने वाले जीव शरीरादिक की अशुचि को देखकर भी धर्मात्मा के प्रति घृणा-तिरस्कार नहीं करते; किन्तु उनके पवित्र गुणों के प्रति प्रेम व आदर करते हैं; ऐसा निर्विचिकित्सा अंग है। (इस निर्विचिकित्सा अंग के लिए उदयन राजा का दृष्टान्त शास्त्रों में प्रसिद्ध है; वह 'सम्यक्त्व कथा' आदि ग्रन्थों में आप पढ़ सकते हैं।)

किसी धर्मात्मा के पुण्य अल्प हो, उससे क्या ? पुण्य तो उदयभाव का फल है, उससे आत्मा की शोभा नहीं होती; आत्मा तो सम्यक्त्वादि से ही शोभता है। धर्म में तो गुण से ही शोभा है, पुण्य से नहीं। कुत्ता जैसा एक तिर्यंच भी यदि सम्यक्त्वसहित हो तो शोभा पाता है, जबकि मिथ्यादृष्टि बड़ा देव हो तो भी शोभा नहीं पाता। अल्प पुण्योदय के कारण से कोई धर्मात्मा निर्धन हो, कुरूप भी हो और स्वयं धनवान-रूपवान हो तो इस कारण से धर्मी दूसरे साधर्मी से अपनी अधिकता नहीं मानता और दूसरे का तिरस्कार नहीं करता; परन्तु उसके गुण की प्रीतिपूर्वक आदर करता है कि वाह ! देहादि की इतनी प्रतिकूलता होने पर भी ये धर्मात्मा अपने धर्म को अच्छी तरह साध रहे हैं, उनको धन्य है।

पुण्य के तो अनेक प्रकार हैं, उसमें हीनाधिकता हो, उससे क्या ? अन्तर का धर्म तो पुण्य से अलग है। इसप्रकार देह और आत्मा के धर्मों की भिन्नता जानने से देहादि की हीनता देखकर भी धर्मात्मा के गुणों के प्रति अनादर का भाव नहीं होता; किन्तु गुणों के प्रति प्रेम आता है ह्न ऐसा सम्यक्त्व का तीसरा अंग है।

४. अमूढ़दृष्टि अंग का वर्णन

आत्महित का सत्य मार्ग जिसने जान लिया है ह्न ऐसा धर्मात्मा सच्चे-झूठे की परीक्षा करने में जरा भी नहीं घबराता, सच्चे देव-गुरु-धर्म और झूठे देव-गुरु-धर्म को अच्छी तरह पहचान कर असत्य मार्ग की प्रशंसा भी छोड़ देता है। अंतर में तो असत्यमार्ग को दु:खदायक जानकर छोड़ ही दिया है और मन-वचन-काया से भी वह कुमार्ग की प्रशंसा या अनुमोदना नहीं करता। कुमार्ग का सेवन बहुत लोग करते हों, बड़े-बड़े राजा भी उसका सेवन करते हों तो भी धर्मात्मा को सन्देह नहीं होता कि उसमें कुछ सच्चा होगा ? वह तो अपने जिनमार्ग में नि:शंक रहता है ह्न ऐसा अमूढ़ दृष्टिपना धर्मी को होता है।

वीतराग-सर्वज्ञ अरहंत व सिद्ध परमात्मा को छोड़कर अन्य किसी देव को वह नहीं मानता।

रत्नत्रयधारी निर्ग्रन्थ मुनिराज को छोड़कर अन्य किसी कुगुरु को वह नहीं मानता।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप वीतरागधर्म के अतिरिक्त अन्य किसी धर्म को मोक्ष का कारण नहीं मानता और उसका सेवन भी नहीं करता।

इसप्रकार देव-गुरु-धर्म के संबंध में धर्मी को मूढ़ता नहीं होती। कुदेव-कुगुरु-

कुधर्म को मानने वाला जीव समाज में करोड़ों मूढ़ लोगों के द्वारा पूजा जाता हो। अरे! देव उसके पास आते हों तो भी धर्मी को मार्ग की शंका नहीं होती और तत्त्वनिर्णय में वह नहीं घबराता। निश्चयरूप अपने शुद्ध आत्मस्वरूप में तो वह नि:संदेह है, दृढ़ है और व्यवहार में अर्थात् देव-गुरु-शास्त्र-तत्त्व इत्यादि के निर्णय में भी वह नि:संदेह है, दृढ़ है। सुख का मार्ग ऐसा वीतराग जैनमार्ग और दु:ख का मार्ग ऐसा कुमार्ग, उसकी अत्यन्त भिन्नता जानकर कुमार्ग की सेवा-प्रशंसा-अनुमोदना सर्वप्रकार से छोड़ देता है।

कुमार्ग के मानने वाले बहुत जीव हों और सत्यमार्ग के जानने वाले जीव बहुत कम हों; किन्तु इससे धर्मात्मा को घबराहट नहीं होती कि कौन-सा मार्ग सच्चा होगा? अरे, चाहे मैं अकेला होऊँ तो भी मेरे हित का मार्ग मैंने जान लिया है, वही परम सत्य है और ऐसा हितमार्ग दिखाने वाले वीतरागी देव-गुरु ही सच्चे हैं। स्वानुभव से मेरा आत्मतत्त्व मैंने जान लिया है। इससे विरुद्ध सभी मान्यतायें झूठी हैं; ऐसी निःशंकता से धर्मी जीव ने कुमार्ग की मान्यता को असंख्य आत्मप्रदेशों में से निकाल दी है। वह शुद्ध दृष्टिवंत जीव किसी भय से, आशा से, स्नेह से या लोभ से कुदेवादि के प्रति प्रणाम, विनयादि नहीं करता।

अरे जीव ! तुझे ऐसा मनुष्यत्व मिला; ऐसा सत्य धर्म का योग मिला, तो अब तेरी विवेकबुद्धि से सत्य-असत्य की परीक्षा द्वारा निर्णय कर, आत्मा के लिए परम हितकर ऐसे सर्वज्ञ भगवान के मार्ग का स्वरूप समझकर उसका सेवन कर और कुमार्ग के सेवनरूप मूढ़ता को छोड़। अरहंत भगवान का मार्ग जिसने जान लिया है, ऐसा जीव जगत् में कहीं भ्रमित नहीं होता; भगवान के मार्ग का नि:शंकता से सेवन करता हुआ मोक्ष को साधता है। सम्यग्दृष्टि का ऐसा अमूढ़दृष्टित्व-अंग है।

(इस अमूढ़दृष्टित्व अंग के पालन में रेवती-रानी का उदाहरण शास्त्र में प्रसिद्ध है, वह 'सम्यक्त्वकथा' आदि पुस्तक में देख लेना चाहिए)। इसप्रकार सम्यक्त्व के चौथे अंग का वर्णन किया। **(क्रमश:)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

नियमसार प्रवचन -

जीव का स्वरूप कैसा है ?

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 45-46वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

वण्णरसगंधफासा थीपुंसणउंसयादिपज्जाया।
संठाणा संहणणा सव्वे जीवस्स णो संति।।४५।।
अरसमरूवमगंधं अव्वत्तं चेदणागुणमसद्दं।
जाण अलिंगग्गहणं जीवमणिद्दिट्ठसंठाणं।।४६।।

(हरिगीत)

स्पर्श रस गंध वर्ण एवं संहनन संस्थान भी।
नर, नारि एवं नपुंसक लिंग जीव के होते नहीं।।४५।।
चैतन्यगुणमय आतमा अव्यक्त अरस अरूप है।
जानो अलिंगग्रहण इसे यह अर्निदिष्ट अशब्द है।।४६।।

वर्ण-रस-गंध-स्पर्श, स्त्री-पुरुष-नपुंसकादि पर्यायें, संस्थान और संहनन- ये सब जीव को नहीं है।

जीव को अरस, अरूप, अगंध, अव्यक्त, चेतनागुणवाला, अशब्द, अलिंगग्रहण (लिंग से अग्राह्य) और जिसे कोई संस्थान नहीं कहा है ऐसा जानो।

(गतांक से आगे ...)

सभी जीवों के कारणरूप शुद्धज्ञानचेतना है, अत: आनन्दचेतना भी है। दोनों अनादि-अनन्त हैं।

कारणसमयसार अर्थात् त्रिकाली शक्तिरूप शुद्ध आत्मा निगोद से लेकर सिद्ध तक सभी जीव हैं, उन सभी को शुद्धचेतना है, अत: सहजफलरूप शुद्धज्ञानचेतना अर्थात् आनन्द भी है। यहाँ प्रगट आनन्द की बात नहीं है; किन्तु अनादि-अनन्त सहज एकरूप रहनेवाले आनन्द की बात है।

त्रिकाली सामान्यद्रव्य तथा कारणपर्यायसहित सम्पूर्ण कारणपरमात्मा दृष्टि में

लेना धर्म का कारण है।

कारणपरमात्मा प्रत्येक जीव है और उसमें ज्ञान, दर्शन, आनन्द आदि भरपूर भरा पड़ा है, उसके आश्रय से ह्न श्रद्धा-ज्ञान से धर्म होता है। वेदान्त में पर्याय को उड़ा दिया है, वे सब मिलकर एक आत्मा कहते हैं; किन्तु वस्तुस्वरूप ऐसा नहीं है। संसारदशा एकसमय की पर्याय है, व्यवहारनय से वह सत् है; परन्तु द्रव्यदृष्टि कराने के लिए उसे गौण किया है ह्न अभाव नहीं किया है। संसार, मोक्षमार्ग व मोक्ष-व्यवहारनय का विषय है, उसे गौण करके परमपारिणामिकभाव और उसकी वर्तमान ध्रुवकारणपर्याय सहित सम्पूर्ण ध्रुव भगवान आत्मा शुद्ध पड़ा है। उत्पाद-व्ययरहित एकरूप रहने वाली कारणपर्याय विशेष और त्रिकाली परमपारिणामिकभाव सामान्यध्रुव - इन दोनों सहित पूर्ण कारणपरमात्मा द्रव्यार्थिकनय का विषय है। उसे दृष्टि में लेने से धर्मदशा प्रगट होती है। यहाँ शुद्धज्ञानचेतना और आनन्दचेतना की प्रधानता से कथन है। उत्पाद-व्ययरहित त्रिकाली ध्रुव कारणशुद्ध चेतना तथा उसके फलरूप सहज आनन्दचेतना प्रत्येक जीव को होती है।

अहो ! टीकाकार मुनिराज ने अध्यात्म की मस्ती में बहुत सूक्ष्म बात, अद्भुत बात नियमसार में कही है। कारणपरमात्मा का ऐसा स्पष्ट स्वरूप किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं है। मूलगाथा में चेतनागुण शब्द है, उसमें से टीकाकार ने मूल अभिप्राय को निकालकर अलौकिक टीका की है।

किस कारण के आधार से आनन्द और ज्ञानरूपी कार्य प्रगट होता है?

तुझे कार्य करना है न ! यदि परजीव और परपदार्थों का कार्य करना है; तो यह तो तेरे अधिकार से बाहर की बात है। यदि तुझे राग करना है; तो यह भी अनादिकाल से करता ही आया है, इससे तो संसार बना ही है। तेरा वास्तविक कार्य तो जानने का ही है और वही तू कर सकता है। वह कार्य किसमें से आयेगा ? इसका निर्णय कर।

(१) निमित्त और परपदार्थों की शक्ति नहीं, जो तुझे ज्ञान-आनन्द दे सकें।

(२) राग-व्यवहार की शक्ति नहीं जो तुझे ज्ञान-आनन्द प्रदान कर सके।

(३) क्षायोपशमिक अंश-पर्याय की शक्ति नहीं जो तुझे नया-नया ज्ञान-आनन्द दे सके।

(४) शुद्ध ज्ञानचेतना और फलरूप आनन्दचेतना अनादि-अनन्त

कारणपरमात्मा में भरी पड़ी है, उसकी श्रद्धा-ज्ञान-एकाग्रता से कार्यरूप शुद्धज्ञान आनंदचेतना प्रगटती है। भगवान की दिव्यध्वनि में यही उपदेश आया है कि इस कारणपरमात्मा के आधार से सम्यग्दर्शन, चारित्र, शुक्लध्यान, मोक्षदशा तथा आनंददशा प्रगटती है।

इसप्रकार जब जीव अपने में कार्य प्रगट करे तब निमित्त से कार्य हुआ अथवा व्यवहार से निश्चय हुआ, ऐसा उपचार-कथन करने में आता है अथवा मोक्षमार्ग से मोक्ष हुआ ह्न ऐसा व्यवहार से बोला जाता है; परन्तु निश्चय के बिना व्यवहार नहीं हो सकता, मोक्षरूपी कार्य का वास्तविक कारण तो त्रिकाली शुद्धस्वभाव है। उस कारणपरमात्मा के शुद्धज्ञानचेतना तथा सहजफलरूप आनन्दचेतना होती है। यह एक ही कारण है, दूसरा कोई कारण नहीं है, मात्र उपचार से अन्य को कारण कहा जाता है।

शुद्धकारणपरमात्मा संसार अथवा मोक्ष में एकरूप है, अतः वही श्रद्धा में लेने योग्य है।

सहजशुद्धज्ञानचेतनास्वरूप निजकारणपरमात्मा संसार अवस्था में अथवा मुक्तावस्था में सर्वथा एकरूप होने से उपादेय है, ऐसा हे शिष्य! तू जान। क्या उपादेय है? किसकी श्रद्धा करने से सम्यग्दर्शन प्रगट होता है? स्वाभाविक सहज शुद्धज्ञायकस्वभाव, जिसके साथ आनन्द रहता है, वह निजकारणपरमात्मा है, जो संसार अथवा मुक्तावस्था में सर्वथा एकरूप है ह्न वही उपादेय हैं, वही अंगीकार करने योग्य है। संसारावस्था प्रथम से लेकर चौदहवें गुणस्थान तक हैं, वह अनादि-सान्त है और मोक्षदशा सादि-अनन्त है। दोनों अवस्थाओं में शुद्धचेतनास्वभाव एकरूप है। सिद्धदशा प्रगट होने पर शुद्धज्ञानचेतना नवीन प्रगट होती है, वह अनादि-अनन्त नहीं है, वह व्यवहारनय का विषय है, अतः जानने योग्य तो है, किन्तु आदर करने योग्य नहीं है।

चेतना में बारह प्रकार के उपयोग हैं, वे आदरणीय नहीं। अज्ञान अनादि-सान्त है और केवलज्ञान सादि-अनन्त है, किन्तु आदरणीय नहीं। दृष्टि को दृष्टि आदरणीय नहीं; दृष्टि को शुक्लध्यान, केवलज्ञान अथवा सिद्धपद भी आदरणीय नहीं है; दृष्टि को तो सहजकारणपरमात्मा जो एकरूप है ह्न वही आदरणीय है।

(क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : उपयोग का पर से हनन नहीं होता - इसका क्या अर्थ है ?

उत्तर : प्रवचनसार गाथा 172 में अलिंगग्रहण के नौवें बोल में उपयोग का पर से हनन नहीं होता - ऐसी बात आई है हनन अर्थात् नाश। मुनि को चारित्रदशा होती है और वे स्वर्ग में जाते हैं, वहाँ चारित्रदशा तो नाश को प्राप्त हो जाती है तो भी स्व के लक्ष्य से जो उपयोग हुआ है, वह नाश नहीं होता। स्व के लक्ष्य से उपयोग हुआ है। वह तो अप्रतिहत हुआ है - नाश नहीं होता।

प्रश्न : धर्म क्या है ? अर्थात् साक्षात् मोक्षमार्ग क्या है ?

उत्तर : 'चारित्तं खलु धम्मो' अर्थात् चारित्र वास्तव में धर्म है, वही साक्षात् मोक्षमार्ग है।

प्रश्न : चारित्र का अर्थ क्या है ?

उत्तर : शुद्ध-ज्ञानस्वरूप आत्मा में चरना-प्रवर्तन करना चारित्र है।

प्रश्न : ऐसे चारित्र के लिए प्रथम क्या करना चाहिये ?

उत्तर : चारित्र के लिए प्रथम तो स्व-पर के यथार्थ स्वरूप का निश्चय करना चाहिए, क्योंकि उसमें एकाग्र होना है। वस्तु के स्वरूप का निश्चय किए बिना उसमें स्थिर कैसे होगा ? इसलिए प्रथम जिसमें स्थिर होना है, उस वस्तु के स्वरूप का निश्चय करना चाहिए।

प्रश्न : 'चारित्तं खलु धम्मो' चारित्र वास्तव में धर्म है - ऐसा कहा, उस चारित्र का स्वरूप क्या है और उसकी प्राप्ति के लिए प्रथम क्या करना चाहिए ?

उत्तर : शुद्धज्ञानस्वरूप आत्मा में चरना-प्रवर्तना, वह चारित्र है। चारित्र के लिए प्रथम तो स्व-पर के यथार्थस्वरूप का निश्चय करना चाहिए; क्योंकि जिसमें एकाग्र होना है, उस वस्तु के स्वरूप का निश्चय किये बिना उसमें स्थिर कैसे होगा ? अतः जिसमें स्थिर होना हो, उस वस्तु के स्वरूप का प्रथम ही निश्चय करना चाहिए।

प्रश्न : वस्तु के स्वरूप का निश्चय किसप्रकार करना चाहिए ?

उत्तर : इस जगत में मैं स्वभाव से ज्ञायक ही हूँ। मेरे से भिन्न जगत के समस्त जड़-चेतन पदार्थ मेरे ज्ञेय हैं। विश्व के पदार्थों के साथ ज्ञेय-ज्ञायक सम्बन्ध के अतिरिक्त अन्य कोई सम्बन्ध मेरा नहीं है। कोई भी पदार्थ मेरा नहीं और मैं किसी के

कार्य का कर्त्ता नहीं। प्रत्येक पदार्थ अपने स्वभावसामर्थ्य से ही उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यस्वरूप से परिणमित हो रहा है, उसके साथ मेरा कोई भी सम्बन्ध नहीं है। जो जीव ऐसा निर्णय करता है, वही पर के साथ का सम्बन्ध तोड़कर निजस्वरूप में उपयोग को जोड़ता है और उसे ही स्वरूप में चरणरूप चारित्र होता है। इसप्रकार चारित्र के लिए प्रथम वस्तुस्वरूप का निर्णय करना चाहिए।

प्रश्न : ऐसा समझने पर तो कोई जीव व्रत और त्याग करेगा ही नहीं ?

उत्तर : कौन त्याग करता है और किसका त्याग करता है ? परवस्तु का तो ग्रहण-त्याग कोई जीव कर ही नहीं सकता, मात्र अपने विकार का ही त्याग किया जा सकता है।

प्रश्न : विकार का त्याग कौन कर सकता है ?

उत्तर : जिसको विकार से भिन्न स्वभाव की प्रतीति हुई हो, वही जीव विकार का त्याग कर सकता है। राग से भिन्न आत्मस्वभाव को जाने बिना राग का त्याग कैसे करेगा ? सम्यग्दर्शन द्वारा राग से भिन्न स्वभाव की श्रद्धा करने के पश्चात् ही राग का यथार्थरूप से त्याग हो सकता है। जो जीव अपने शुद्धस्वभाव को तो जानता नहीं है और राग के साथ एकत्व मानता है, वह जीव राग का त्याग नहीं कर सकता; इसलिए इसे समझने के बाद ही सच्चा त्याग हो सकता है। सच्चा त्याग तो सम्यग्दृष्टि ही कर सकता है। मिथ्यादृष्टि को तो किसका त्याग करें और किसको ग्रहण करें - इसका भान ही नहीं है, अत: उसका त्याग सच्चा नहीं होता।

प्रश्न : पदार्थ के स्वरूप का निर्णय करने वाला जीव कैसा होता है ?

उत्तर : वह जीव अपने आत्मा को कृतनिश्चय, निष्क्रिय तथा निर्भोग देखता है। उसे स्व-पर के स्वरूप सम्बन्धी सन्देह दूर हो गया है। परद्रव्य की किसी भी क्रिया को वह आत्मा की नहीं मानता तथा अपने आत्मा को परद्रव्य में प्रवृत्तिरूप क्रिया से रहित-निष्क्रिय देखता है; परद्रव्य के उपभोग रहित निर्भोग देखता है। ऐसे अपने स्वरूप को देखता हुआ वह जीव सदेह तथा व्यग्रता रहित होता हुआ निजस्वरूप में एकाग्र होता है। निजस्वरूप की धुन का धुनी होकर उसमें स्थिर होता है। इसप्रकार वस्तुस्वरूप का निर्णय करने वाले को ही चारित्र होता है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

11 मई	इन्दौर (रवीन्द्र नाट्यग्रह)	कानजीस्वामी जयन्ती
12 से 15 मई	इन्दौर (ओमविहार)	वेदी प्रतिष्ठा
21 मई से 7 जून	देवलाली	प्रशिक्षण शिविर
7 जून से 16 जुलाई	विदेश	धर्मप्रचारार्थ

समाचार दर्शन -

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में -

विदाई समारोह सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 7 अप्रैल को श्री टोडरमल दिग. जैन सि. महा. के शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों का विदाई समारोह संपन्न हुआ।

इस प्रसंग पर प्रात: पंचतीर्थ जिनालय पर जिनेन्द्र पूजन और रात्रि में भव्य जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर दो सत्रों में आयोजित विदाई समारोह में प्रथम सत्र की अध्यक्षता अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य-टोडरमल महाविद्यालय) ने व द्वितीय सत्र की अध्यक्षता तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल (निदेशक-टोडरमल महाविद्यालय) ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. दीपकजी वैद्य जयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर, डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर, डॉ. कमलेशजी जैन, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, श्री शान्तिलालजी जैन अलवरवाले, श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर, श्री अजितजी तोतुका जयपुर, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री जयपुर, पण्डित संतोषजी शास्त्री जयपुर, श्रीमती कमला भारिल्ल श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, श्रीमती श्रीकान्ता छाबड़ा एवं कु. प्रतीति पाटील इत्यादि महानुभाव एवं अध्यापकगण मंचासीन थे।

कार्यक्रम में अनेक विद्यार्थियों ने अपने अनुभव सुनाते हुए महाविद्यालय को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्या अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताया तथा स्वयं को सौभाग्यशाली बताया। इस अवसर पर एक विद्यार्थी ने जीवनपर्यन्त समयसार को टीका सहित 100 बार पढने का संकल्प व्यक्त किया। महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी एवं विशिष्ट अतिथियों ने विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य बनाने की प्रेरणा, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन दिया।

डॉ. भारिल्ल ने तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों से कहा कि अभी तक तो आप यहाँ अपने शिक्षकों से शिक्षा ले रहे हैं। उन्होंने आपको सर्वप्रकार से योग्य बनाया है। अब आपको बाहर कार्यक्षेत्र में जाकर अपनी योग्यता सिद्ध करनी है। अत: अब उसके लिए तैयार हो जाओ। इसप्रकार डॉ. भारिल्ल ने सभी विद्यार्थियों को तत्त्वज्ञान का प्रचार करने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा अपने अग्रजों को निम्न संदेश दिया गया-

''अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है, बढे चलो बढे चलो।''

इसी क्रम में शास्त्री द्वितीय वर्ष की ओर से नियम जैन ने कविता और पंकज जैन व

कुलभूषण जैन ने विदाई गीत की प्रस्तुति दी।

अंत में शास्त्री तृतीय वर्ष के सभी छात्रों को फोटो, गिफ्ट, श्रीफल और ग्रन्थ भेंटकर सम्मानित किया गया।

सम्पूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन शास्त्री द्वितीय वर्ष के सभी छात्रों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के अन्तर्गत महाविद्यालय के इस सत्र (2012-13) के विशिष्ट पुरस्कारों की घोषणा की गई, जिसमें विद्यालय की पाँचों कक्षाओं में आदर्श कक्षा का पुरस्कार उपाध्याय कनिष्ठ कक्षा को, आदर्श विद्यार्थी का पुरस्कार ऋषभ जैन दिल्ली (उपाध्याय कनिष्ठ) को दिया गया। इसके अतिरिक्त कक्षा के आदर्श छात्र के रूप में उपाध्याय कनिष्ठ से सौरभ जैन मडदेवरा, उपाध्याय वरिष्ठ से हिमांशु जैन इटावा, शास्त्री प्रथम वर्ष से मयंक जैन टीकमगढ, शास्त्री द्वितीय वर्ष से अभय जैन सुनवाहा और शास्त्री तृतीय वर्ष से अनुपम जैन भिण्ड को पुरस्कृत किया गया। साथ ही विशेष सहयोगी के रूप में चिकित्सा सेवा की व्यवस्था में सहयोग करने हेतु विवेक जैन अमरमऊ को पृथक् से पुरस्कृत किया गया।

अष्टाह्निका महापर्व सानंद संपन्न

(1) अलवर (राज.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 20 से 27 मार्च तक कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट द्वारा आयोजित श्री पंचमेरु नंदीश्वर विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, पण्डित राजीवजी शास्त्री, पण्डित किशोरजी शास्त्री बैंगलोर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर आदि विद्वानों का कक्षा/प्रवचन आदि के माध्यम से लाभ मिला। छह सामान्य गुण पर पण्डित सुरेन्द्रजी जैन उज्जैन द्वारा कक्षा ली गई। इस विषय की अन्तिम दिन परीक्षा भी हुई। परीक्षा में 33 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

स्थानीय विद्वान पण्डित किशनचंदजी जैन द्वारा पंचमेरु नंदीश्वर की रचना पर विशेष कक्षा का आयोजन किया गया।

शिविर में सैकड़ों साधर्मियों ने तत्त्वज्ञान का अपूर्व लाभ लिया। इस अवसर पर 100 वर्ष पूर्ण कर चुके वरिष्ठ मुमुक्षु श्री हजारीलालजी जैन बडेरवालों का ट्रस्ट द्वारा विशेष सम्मान किया गया। श्री रतनलाल वन्दना प्रकाशन एवं श्री सुभाषजी अग्रवाल ने आगन्तुक महानुभावों एवं आयोजन के विशेष सहयोगियों का स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मान किया।

कार्यक्रम का निर्देशन पण्डित अरुणकुमारजी शास्त्री एवं पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री ने किया। संपूर्ण कार्यक्रम पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में संपन्न हुआ।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित अश्विनजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं पण्डित अभिषेकजी

शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा संपन्न हुये।

(2) कोटा (राज.) : यहाँ मुमुक्षु आश्रम में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 19 से 27 मार्च तक श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित प्रकाशजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित संजयजी हरसौरा आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

श्री प्रेमचंदजी बजाज द्वारा आयोजित इस विधान में प्रतिदिन लगभग 200 जोड़ों ने पूजन की एवं अन्तिम दिन लगभग 1500 साधर्मियों ने पूजन का लाभ लिया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा संपन्न हुये।

दीक्षान्त समारोह संपन्न - यहाँ मुमुक्षु आश्रम में स्थित आचार्य धरसेन दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय का दीक्षान्त समारोह दिनांक 26 मार्च को संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य-श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय) ने की। इसके अतिरिक्त श्री ज्ञानचंदजी, श्री प्रेमचंदजी बजाज, श्री रतनचंदजी चौधरी, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, श्री मदनलालजी एडवोकेट, श्री एस.एन. दाधीच, श्रीमती कमला भारिल्ल आदि महानुभाव उपस्थित थे।

विगत 5 वर्षों से चल रहे आचार्य धरसेन दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के 7 छात्रों को इस वर्ष आगम शास्त्री की उपाधि प्रदान की गई। इसके पश्चात् अनेक छात्रों ने अपने अनुभव सुनाये। कार्यक्रम का संचालन शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों ने किया। **- रतनचंद चौधरी**

(3) अजमेर (राज.) : यहाँ पुरानी मण्डी स्थित सीमंधर जिनालय में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री समयसार महामंडल विधान किया गया।

इस अवसर पर ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा प्रात: ग्रन्थाधिराज समयसार एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक के सातवें अधिकार पर प्रवचन हुये।

रात्रि में प्रवचनोपरान्त प्रतिदिन जैन सिद्धांतों का समावेश करते हुए गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें वंदना गंगवाल, मेघा लुहाड़िया, अर्चना गंगवाल, अनिता कासलीवाल, अर्चना जैन, संजय सोनी आदि वक्ताओं ने अतिउत्साह से भाग लिया।

विधान में प्रतिदिन लगभग 100 साधर्मियों ने लाभ लिया। विधान के प्रारंभ में ध्वजारोहण श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, विधान का उद्घाटन श्री पुखराजजी पहाड़िया पीसांगन ने किया। श्रुत विराजमानकर्ता श्री सुशीलजी पहाड़िया परिवार किशनगढ थे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर के निर्देशन में श्री निशान्तजी जैन बांरा सिवनी के सहयोग से संपन्न हुये। ●

क्या आप चाहते हैं ?

● आपके बालकों का जीवन जैन तत्त्वज्ञान के संस्कारों से सुशोभित हो।

● वे जैन तत्त्वज्ञान के ठोस विद्वान बनें। ● वे स्वपर के कल्याण में अपना जीवन लगायें।

यदि हाँ तो शीघ्रता करें,

अपने बालकों को जैनदर्शन शास्त्री कराने हेतु श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर में प्रवेश दिलायें।

इस विद्यालय में –

● दसवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण मात्र 50 छात्रों को उपाध्याय कनिष्ठ (11वीं कक्षा) में प्रवेश दिया जायेगा। ● छात्र यहाँ 5 वर्ष तक रहकर राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय से जैनदर्शन शास्त्री (स्नातक के समकक्ष) की डिग्री प्राप्त करते हैं, जो पूरे देश में मान्य है। ● छात्रों की आवास/भोजन/शिक्षा/स्वास्थ्य की सभी उच्चस्तरीय सुविधायें संस्था द्वारा नि:शुल्क उपलब्ध करायी जाती हैं।

प्रवेशार्थी छात्रों को –

21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में रहना अनिवार्य है। महाविद्यालय में प्रवेश हेतु छात्रों का चयन इसी शिविर में होता है।

विशेष जानकारी एवं प्रवेश आवेदन पत्र प्राप्त करने हेतु संपर्क करें-

पण्डित रतनचंद भारिल्ल	पण्डित शान्तिकुमार पाटील	पण्डित सोनू शास्त्री
प्राचार्य	उपप्राचार्य	अधीक्षक

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015

फोन-0141-2705581 मो. 9785643277 (सोनू शास्त्री) ptstjaipur@yahoo.com

शोक समाचार

1. सतना (म.प्र.) निवासी श्री नीरजजी जैन का दिनांक 26 मार्च को 87 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया।

आपने विश्व के अनेक देशों में जैनधर्म का परचम लहराया है। 1999 में अफ्रीका में आयोजित विश्व धर्म संसद में महावीर की मनीषा को प्रस्तुत करने का गौरव भी आपको प्राप्त हुआ। आपकी अन्तिम इच्छानुसार नेत्रदान भी किया गया।

2. छबड़ा-बारां (राज.) निवासी श्री दीपचंदजी जैन पोरवाल का शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान हेतु 201/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त करें-यही मंगल भावना है।

पाठशाला का प्रगति प्रतिवेदन

मुम्बई : यहाँ मलाड (ईस्ट) में स्थित श्री कहान दिगम्बर जैन उत्कर्ष मुमुक्षु मण्डल में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय भवन ट्रस्ट के अन्तर्गत सन् 2007 में स्थापित श्रीमती प्रमिलाबेन रसिकलाल चंदुलाल मेहता वीतराग-विज्ञान पाठशाला की उपलब्धियाँ इसप्रकार हैं-

1. वर्ष में दो बार जिन मंदिर में पाठशाला के बच्चों के लिए जिनेन्द्र भगवान के प्रक्षाल और पूजन के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। 2. दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पाठशाला के सभी लड़कों को धोती-दुपट्टा पहनाकर जिनेन्द्र देव का प्रक्षाल कराकर, अष्टद्रव्य से पूजन करना सिखाया जाता है। 3. पाठशाला के सभी बच्चों को पिकनिक हेतु धार्मिक स्थल त्रिमूर्ति पोदनपुर एवं मुम्ब्रा लेकर गये। 4. बच्चों को लोनावाला जिनमंदिर के दर्शन भी कराये गये। 5. दिसम्बर 2012 को छुट्टियों के समय 5 वर्ष से अधिक उम्र के बच्चों को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की कर्मभूमि सोनगढ, जन्मभूमि उमराला, धोघा, भावनगर एवं शत्रुंजय पालीताणा की यात्रा करवाई गई। 6. वर्ष में दो बार अलग-अलग प्रोजेक्ट दिये जाते हैं और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। 7. अधिकांश बच्चों ने कंदमूल फल और वर्क वाली मिठाई के सेवन का एवं दीपावली में पटाखे फोड़ने का त्याग किया है। 8. पाठशाला में बच्चों की संख्या 40 से बढकर 250 हो गई है।

इस पाठशालारूपी ज्ञानयज्ञ में बच्चों में धार्मिक संस्कार डालने हेतु पण्डित अनिलजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, कु. नियति गांधी, विवेक जैन, सौ. अनिता शाह, हिनाबेन शाह, प्राची शाह और अनुभूति जैन अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते हैं। स्वाध्याय भवन में शुक्रवार रात्रि को बालपोथी, शनिवार रात्रि को बालबोध पाठमाला भाग-1, 2, 3 और वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1, 2, 3, रविवार को प्रात: बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 1, 2 की कक्षायें चलती हैं। मंगलवार से शुक्रवार तक महिलाओं की कक्षायें चलती है।

मलाड, कांदीवली एवं गोरेगांव से आवागमन हेतु 11 वैन की नि:शुल्क व्यवस्था की गई है। बच्चों को आकर्षिक करने हेतु प्रति सप्ताह गिफ्ट एवं पुरस्कार की व्यवस्था भी की गई है।

मुम्बई जैसी मायानगरी की व्यस्तता होते हुए भी बालकों को संस्कारित करने के लिए कार्यकर्ताओं का समर्पण एवं माता-पिता की रुचि प्रशंसनीय है। अत: अन्य पाठशालायें भी इससे प्रेरणा प्राप्त करें।

श्री आदिनाथ जयन्ती पर विचार गोष्ठी

जयपुर (राज.) : यहाँ आदिनाथ जयन्ती की पूर्व संध्या पर दिनांक 3 अप्रैल को राजस्थान जैन सभा द्वारा राजस्थान चैम्बर भवन में 'युगप्रवर्तक के रूप में ऋषभदेव व भरत चक्रवर्ती का योगदान' विषय पर विचार गोष्ठी सम्पन्न हुई। मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने की। मुख्य अतिथि श्री रमेशचंदजी तिजारिया एवं विशिष्ट अतिथि श्री अमरचंदजी छाबड़ा थे। श्री कमलबाबू जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गोष्ठी के संयोजक श्री महेशचंदजी चांदवाड थे।

10वीं उत्तीर्ण छात्रों को अपूर्व अवसर

ध्रुवधाम-बांसवाड़ा : यहाँ 'आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय' में सत्र 2013-14 हेतु 10वीं उत्तीर्ण छात्रों को कक्षा 11 में (शास्त्री तक 5 वर्षीय पाठ्यक्रम हेतु) प्रवेश दिया जा रहा है।

विशेषतायें - (1) आवास, भोजन, शिक्षण सभी नि:शुल्क, (2)शत-प्रतिशत परीक्षा-परिणाम, (3) जिनेन्द्र-पूजन, प्रवचन, गोष्ठी, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से सर्वांगीण विकास, (4) अंग्रेजी/संस्कृत की अतिरिक्त कक्षायें, (5) गुरुदेवश्री के सी.प्रवचन, (6) हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, जैनदर्शन विषयों का अध्ययन कर संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री की डिग्री, (7) किसी भी प्रतियोगी परीक्षा के योग्य।

कक्षा 10 में कम से कम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त छात्र प्रवेश हेतु संपर्क कर सकते हैं। **संपर्क सूत्र -** ध्रुवधाम, पोस्ट-कूपड़ा, जिला-बांसवाड़ा 327001 (राज.) महिपालजी ज्ञायक - 9414103475, धनपालजी ज्ञायक - 9414101432

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्मप्रभावना

मुम्बई : यहाँ मलाड में श्री कहान दि. जैन उत्कर्ष मुमुक्षु मण्डल एवं श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय भवन ट्रस्ट के विशेष आमंत्रण पर फाल्गुन माह की अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर दिनांक 10 मार्च से 2 अप्रैल तक ब्र. यशपालजी जैन के विशेष प्रवचनों का लाभ मिला। आपने दोनों समय दशकरण विषय पर 'जीव जीता-कर्म हारा' पुस्तक के आधार से सरल भाषा में करणानुयोग का कठिन विषय समझाया। सभी ने रुचिपूर्वक लाभ लिया एवं गुणस्थान विषय पर विशेष व्याख्यान हेतु पुन: पधारने का आमंत्रण दिया। ब्र. यशपालजी ने समयानुकूलता से पधारने की स्वीकृति दी है।

हार्दिक बधाई !

1. उदयपुर (राज.) निवासी चि. संयम सिंघवी एवं सौ.का. निकिता जैन का शुभ विवाह दिनांक 6 फरवरी को संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री कस्तूरचन्दजी सिंघवी परिवार एवं सोसायटी की ओर से पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट हेतु 11 हजार रुपये प्राप्त हुये।

2. भीलवाड़ा (राज.) निवासी श्री शान्तिलालजी चौधरी के सुपौत्र अभिषेक जैन एवं विशुद्धि जैन (सुपुत्र सुनील-भावना जैन) की 9वीं वर्षगांठ के अवसर पर 1100/- रुपये पूजन तिथि के रूप में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु प्राप्त हुये।

इस अवसर पर वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

(पृष्ठ 18 का शेष ...)

''यदि हम यहाँ-वहाँ के विकल्पों में ही उलझे रहे तो फिर उन रहस्यों का क्या होगा, जो गुरुदेवश्री ने अपनी दिव्यवाणी द्वारा उद्घाटित किये थे और जो आज भी हमारे पास टेपों में सुरक्षित हैं। क्या वे उन्हीं में कैद रह जावेंगे ? हमें उन्हें कागज पर लाना है, जन-जन तक पहुँचाना है। बहुत काम है हमारे सामने जो बहुत आसानी से किए जा सकते हैं और किए जाने चाहिए।

आज हम युग के मोड़ पर खड़े हैं और हमें ऐतिहासिक उत्तरदायित्व वहन करना है। इस दृष्टि से यह महोत्सव अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है; क्योंकि इस अवसर पर हमें अपने कर्त्तव्य का चुनाव करना है।

मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि जब एक बार गुरुदेवश्री के सामने यह प्रश्न आया कि जन्म-जयन्ती के इस आडम्बर से क्या लाभ है ? तब वे सहजभाव से बोले थे कि 'कुछ नहीं, बस बात यह है कि इस बहाने साहित्य की कीमत कम करने के लिए ज्ञानप्रचार में कुछ पैसा आ जाता है और जिनवाणी के अल्प मूल्य में घर-घर पहुँचने का सिलसिला आरंभ रहता है। इसे समाप्त करने से लाभ तो कुछ होगा ही नहीं, यह हानि हो सकती है। अत: चल रही है, सो चल रही है।

इस जन्म-जयन्ती के अवसर पर भी हम इस प्रवाह को चालू रख सके तो मैं समझूँगा कि हम उनके अभाव में उनकी जन्म-जयन्ती उसी रूप में मना सके हैं।

जहाँ तक मुझे स्मरण है, उनकी जन्म-जयन्ती में आया पैसा सदा ज्ञानप्रचार अर्थात् शास्त्रों की कीमत कम करने पर ही लगता रहा है। गुरुदेवश्री की भावना को ध्यान में रखकर आगे भी हमें उक्त परम्परा को कायम रखना चाहिए। ज्ञानप्रचार की उत्कट भावना उनके हृदय में निरंतर प्रवाहमान रहा करती थी। इस बात का अनुभव उनके नजदीक रहनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को भली-भाँति है। उनकी इस पावन मनोभावना का समादर करते हुए हम सब मिलकर संकल्प करें कि हे गुरुदेव ! आपने जो कुछ हमें दिया है, हम उसे जन-जन तक अवश्य पहुँचायेंगे।

गुरुदेवश्री के वियोग में अब उनकी वाणी की ही शरण है; क्योंकि वह आचार्य कुन्दकुन्द आदि आचार्यों के वचनानुसारिणी है। अत: अब हमें उसके अध्ययन, मनन, चिन्तन एवं प्रचार-प्रसार में तन-मन-धन से जुट जाना चाहिए।

गुरुदेवश्री की स्मृति बनाये रखने के लिए उनके पाषाणी स्मारक से इन गतिविधियों के सफल संचालन की अधिक आवश्यकता है, अधिक महत्त्व है; क्योंकि इनसे ही उनके बताये मार्ग का स्थायित्व रहेगा।

यदि हम गुरुदेवश्री के सच्चे अनुयायी हैं, तो हमें सर्वप्रथम इसकी व्यवस्था करना चाहिए कि गुरुदेवश्री की साधनाभूमि सोनगढ़ में जो कार्यक्रम उनके सदभाव में चलते थे, वे उसीप्रकार निरन्तर चलते रहें।

मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि जो उत्तरदायित्व पूज्य गुरुदेवश्री के अभाव में हमारे कंधों पर आया है, उसे हम सब मिलकर आसानी से वहन कर सकते हैं; क्योंकि गुरुदेवश्री ने हमें विधिवत गढ़ा है, सर्वप्रकार सुयोग्य बनाया है, सबकुछ दिया है, किसी भी प्रकार कमजोर नहीं रहने दिया है। बस, आवश्यकता मात्र दृढ़ संकल्प के साथ चल पड़ने की है।''

आज हम अनेक गुटों में विभक्त होते जा रहे हैं। यह स्थिति अच्छी नहीं है। मतभेदहोना कोई बुरी बात नहीं है; क्योंकि सजग चिंतकों में, पढे-लिखे लोगों में यह सहज हीहोताहै; परन्तु जरा-जरा सी बातों पर लड़ना-झगड़ना कदापि उचित नहीं है।

गुरुदेवश्री ने हमें आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार का नारा दिया था। अत: सर्वप्रथम तो हमें सम्पूर्ण शक्ति से आत्मानुभव करने का प्रयास करना चाहिए और दूसरे क्रम में तत्त्वप्रचार की गतिविधियों का संचालन करना चाहिए।

तत्त्वप्रचार की गतिविधियों के निर्विघ्न सफल संचालकों के लिए जितने स्थान की आवश्यकता हो; उतने धर्मायतनों के निर्माण को तो अनुचित नहीं कहा जा सकता; किन्तु अनावश्यक निर्माण कार्यों में शक्ति का उपयोग अनर्थकारी ही है, धनबल-जनबल की बर्बादी ही है।

अन्त में सभी आत्मार्थी मुमुक्षु भाइयों-बहिनों से एकमात्र यही अनुरोध है कि वे अपने समय, शक्ति का उपयोग आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार के कार्यों में लगायें।

सभी को सादर जयजिनेन्द्र। ●

पाठकों के पत्र...

नागपुर (महा.) से श्री अनिल बेलोकर 'जी-जागरण' पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों हेतु धन्यवाद ज्ञापित करते हुए लिखते हैं ह्न

'जी-जागरण' पर डॉ. भारिल्ल जी के प्रवचन सुनने का मौका मिल रहा है। अत्यंत सरल व सहज भाषा शैली के कारण सुनते समय ऐसा लगता है मानो आज भी प्रवचन हॉल में बैठकर सुन रहा हूँ। शेष समय में स्कूल की व्यस्तता के कारण समय निकाल पाना कठिन हो जाता है। सुबह 6.30 से 7 बजे के प्रवचन सुनने से दिन प्रसन्नता से बीतता है।